B.A. I yr
Mamta Pallah
DU Delhi.

907 अव्ययीभावः - 2|1|5.
यह अधिकार सूत्र है। यह बतलाता है कि 'तत्पुरुषः' इस सूत्र से पूर्व सूत्र 'अन्य पदार्थे च संज्ञायाम्' (2|1|21) तक अव्ययीभाव समास का प्रकरण है और यहाँ तक आनेवाले समास अव्ययी-भाव समास कहलाते हैं।

908 - अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि - व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति - शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य - सादृश्य - सम्पत्ति - साकल्यान्तवचनेषु - 2|1|6
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है (1) विभक्ति, (2) समीप, (3) समृद्धि (4) व्यृद्धि (5) अर्थाभाव (6) अत्यय (नाश) (7) अनुचित (8) शब्द प्रादुर्भाव (शब्द की अभिव्यक्ति) (9) पश्चात् (10) यथा (11) क्रमशः (12) एक साथ (13) समानता (14) सम्पत्ति (15) सम्पूर्णता (16) अन्त - इन सोलह अर्थों में प्रयुक्त अव्यय का सुबन्त पद के साथ अव्ययीभाव समास होता है।

यथा - अधिहरि।
जिस समास का विग्रह न हो उसे नित्यसमास कहते हैं, यह विग्रह लौकिक होता है, अलौकिक विग्रह तो सभी समास का होता है। अधिहरि का लौकिक विग्रह - 'हरौ' ऐसा होता है - अलौकि - हरि + ङि + अधि। यहाँ 'अधि' का कोई लौ० विग्रह नहीं हुआ है, इसलिए यह नित्य समास है। इसमें पहला पद कौन सा हो इसके लिए अगले सूत्र का निर्देश करते हैं -

909, प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम् - 1|2|43
यह संज्ञा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है समास में प्रथमा से निर्दिष्ट पद या उस अर्थ के बोधक पद की उपसर्जन संज्ञा होती है। यथा - हरि ङि अधि, में 'अधि' अव्यय है इसकी उपसर्जन संज्ञा होती है।

910, उपसर्जनं पूर्वम् - 2|2|30.
यह विधिसूत्र है। इसका अर्थ है कि समास में उपसर्जन संज्ञक पद का पूर्वनिपात होता है। हरि + ङि + अधि 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा होने से उसका पूर्वनिपात होता है।

Scanned with CamScanner

समास contd.

B.A English
Lumu Baldev Dadhi

913. तृतीया - सप्तम्योर्बहुलम् - 2/4/84

यह वैकल्पिक विधि सूत्र है। यदि अकारान्त अव्ययीभाव के बाद तृतीया एवं सप्तमी हो तो उसका विकल्प से 'अम्' होता है। यथा —

उपकृष्णम् - लौ० वि - कृष्णस्य समीपम्, अ० वि० - कृष्ण + ङस् + उप।

'अव्ययं विभक्ति....' सूत्रानुसार उप अव्यय के साथ 'कृष्णम्' पद का समास हुआ। 'कृत्तद्धित...' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा निर्दिष्ट..' से उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्व निपात होकर - उप + कृष्ण रूप हुआ, 'एकदेश विकृतमनन्यवत्', से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, स्वौजस.. से 'सु' विभक्ति आने पर, 'अव्ययादाप्सुप' से लोप होने पर 'नाव्ययीभावादतो..' से 'अम्' आदेश होकर - 'उपकृष्णम्' रूप सिद्ध हुआ।

(b) सुमद्रम् - मद्राणां समृद्धिः (लौ०वि०), अ०वि० - मद्र + आम् + सु।

(c) दुर्यवनम् - यवनानां व्यृद्धिः (लौ० वि०), अ० वि० - यवन + आम् + दुर्।

(d) निर्मक्षिकम् - लौ० वि० - मक्षिकाणाम् अभावः, अ० वि० - मक्षिका + आम् + निर्।

(e) अतिहिमम् - हिमस्य अत्ययः (लौ० वि०), अ० वि० - हिम + ङस् + अति।

(f) अतिनिद्रम् - लौ० वि० - निद्रा सम्प्रति न युज्यते, अ० वि० - निद्रा + सु + अति।

(g) इतिहरिः - लौ० वि० - हरेः इति, अ० वि० - हरि + ङस् + इति।

(h) अनुविष्णु - लौ० वि० - विष्णोः पश्चात्, अ० वि० - विष्णु + ङस् + अनु।

Scanned with CamScanner

(v) अनुरूपम् – लौ० वि० – रूपस्य योग्यम्, अ० वि० – रूप + ङस् + अनु।

(f) यथाशक्ति – शक्तिम् अनतिक्रम्य (लौ० वि०), अ० वि० – शक्ति + अम् + यथा।

(k) सचक्रम् – लौ० वि० – चक्रेण युगपत्, अ० वि० – चक्र + टा + सह।

(l) ससखि – लौ० वि० – सख्या सह, अ० वि० – सखि + टा + सह (सदृश अर्थ में)

(m) सक्षत्रम् – लौ० वि० – क्षत्राणां सह (सम्प्राप्ति) अ० वि० – क्षत्र + आम् + सह

(n) सतृणम् – लौ० वि० – तृणेन सह (अपरित्यज्य), अ० वि० – तृण + अम् + सह।

(o) साग्नि – लौ० वि० – अग्निग्रन्थपर्यन्तम् (लौ० वि०), अ० वि० – अग्नि + अम् + सह। All are same as 'उपकृष्णम्'

915. नदीभिश्च – 2/1/20
यह विधि सूत्र है। इसका अर्थ है नदीवाचक शब्दों का भी (और) संख्यावाचक शब्दों के साथ समास होता है।
यथा – पञ्चगङ्गम् – लौ० वि० – पंचानां गंगानां समाहारः, अ० वि० – पञ्चन् + आम् + गंगा + आम्।
'तद्धितार्थोत्तरपद...' सूत्रानुसार संख्यावाची पद का नदीवाची 'गंगा' शब्द के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित...' 'सुपो धातु...' 'प्रथमा...' 'उपसर्जनं पूर्वम्' पञ्चन् + गंगा; 'न लोपो...' से अन् का लोप होकर पञ्च + गंगा, 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से 'गंगा' का ह्रस्व होकर – पंचगंग, स्वादिकार्य 'नाव्ययीभावादतो...' से 'अम्' और 'अमि पूर्वः' से 'अम्' आदेश होकर 'पंचगंगम्' रूप सिद्ध हुआ।

(b) द्वियमुनम् – द्वयोः यमुनयोः समाहारः (लौ० वि०), अ० वि० – द्वि + ओस् + यमुना + ओस्। Same as पंचगंगम्।

Scanned with CamScanner